प्रातः क्लास 27-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो बच्चों ने निश्चय किया है रूहानी बाप हम रूहानी बच्चों को पढ़ाते हैं। जिसके लिये ही गायन है आत्माएं परमात्माएं अलग रहे बहुकाल .... मूलवतन में अलग नहीं रहते हैं। वहां तो सभी इकट्ठे रहते हैं। अलग कहते हैं जरूर आत्माएं वहां से बिछुड़ती हैं। आकर अपना2 पार्ट बजाती हैं। सतोप्रधान से उतरते2 तमोप्रधान बनती है। बुलाते भी हैं हे पतित पावन आकर हमको पावन बनाओ। बाप भी कहते हैं हम 5000 वर्ष बाकद आते हैं। यह सृष्टि का चक्र ही 5000 वर्ष है। आगे तुम यह नहीं जानते थे। शिव बाबा समझाते हैं तो जरूर कोई तन द्वारा समझावेंगे ना। ऊपर से कोई आवाज़ तो नहीं करते हैं। शक्ति वा प्रेरणा आदिकी बात नहीं। जैसे तुम आत्माएं शरीर में आकर वातावरण करते हो वैसे बाप भी कहते हैं मैं भी शरीर द्वारा डायरेक्शन देता हूं। फिर उस जो जितना चलते अपना ही कल्याण करते हैं। श्रीमत पर चले वा न चले, टीचर का सुने न सुने अपने लिये ही कल्याण वा अकल्याण करते हैं। न पढ़ेंगे तो जरूर फेल होंगे। यह भी समझाते रहते हैं शिव बाबा से सीखकर फिर औरों को सिखलाना है। फादर सोज सन। जिसमानी फादर की बात नहीं। यह है रूहानी बाप। यह भी तुम समझते हो जितना हम श्रीमत पर चलेंगे उतना ही वरसा पावेंगे। पूरा चलने वाले को ऐसा पद मिलेगा। कम चलने वाले ऐसा पद मिलेगा। बाप तो कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। रावण राज्य में तुम्हारे ऊपर पाप तो बहुत ही चढ़े हुये हैं। विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं। पुण्यात्मा और पापात्मा जरूर होते हैं। पुण्यात्माओं के आगे पापात्माएं माथा टेकते हैं। मनुष्यों को यह भी पता नहीं है कि देवताएं जो पुण्यात्मा हैं फिर वही पुनर्जन्म में आते2 पापात्मा बनते हैं। वह तो समझते हैं वह तो सदैव ही पुण्यात्मा हैं। बाप समझाते हैं पुनर्जन्म लेते2 सतोप्रधान से तमोप्रधान तक आ जाते हैं। जब बिल्कुल पापात्मा बन जाते हैं तो फिर बाप को बुलाते हैं। जब पुण्यात्मा हैं तो याद करने की दरकार नहीं। तो यह तुम बच्चों को समझना है। सर्विस करनी है। बाप तो नहीं जाकर सभी को सुनावेंगे। साधु सन्त आदि मिसल यह नहीं हैं। देखते हैं बच्चे सर्विस करने लायक बने हैं तो बच्चों को ही जाना चाहिए। मनुष्य तो दिन प्रति दिन असुर बनते जाते हैं। पहचान न होने के कारण बकवाद करने भी देरी नहीं करते क्योंकि वह तो समझते हैं परमात्मा ठिकर मिस्तर में है। क्योंकि शास्त्र ही झूठी हो गई है। एक गीता पर ही सारा मदार है। मनुष्य कहते हैं गीता का भगवान कृष्ण हैं। तुम समझाते हो वह तो देहधारी है। उनको देवता कहा जाता। कृष्ण को कब बाप नहीं कहेंगे। यह तो सभी फादर को याद करते हैं। आत्माओं का फादर तो दूसरा कोई होता ही नहीं। यह प्रजापिता ब्रह्मा भी कहते हैं निराकार फादर को याद करना है। वह कारपोरेयल फादर को हो जाता है। समझाया तो बहुत जाता है। कई पूरा न समझकर उल्टा रास्ता ले जाकर जंगल में पड़ते हैं। बाबा तो रास्ता बताते हैं स्वर्ग में जाने का। फिर भी जंगल तरफ चले जाते हैं। बाप समझाते हैं तुमको जंगल तरफ ले जाने वाला रावण है। तुम मायासे हार खाते हो रास्ता भूल जाते हो तो फिर उस जंगल के कांटे बन जाते हो। वह फिर स्वर्ग में भी देरी से आवेंगे। यहां तो तुम आये हो हो स्वर्ग में जाने का पुरुषार्थ करने। त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहा जाता। 25% कम हुआ ना। वह फेल गिना जाता। यहां तुम आये हो हो पुरानी दुनिया को छोड़ नई दुनिया में ले जाने लिये। बाप कहते हैं पुरानी दुनिया को त्याग अब नई दुनिया को याद करना है। ऐसे थोड़ेही कहते हैं कि त्रेता को याद करो। त्रेता को नई दुनिया नहीं कहेंगे। नापास वहां चले जाते हैं। क्योंकि रास्ता ठीक पकड़ते नहीं। नीचे-ऊपर होते रहते हैं। तुम महसूस करते हो जो याद होनी चाहिए वह नहीं रहती। स्वर्गवासी जो बनते हैं उनको कहेंगे अच्छा पास। त्रेतावासी नापास गिने जाते। तुम नर्कवासी से स्वर्गवासी बनते हो। नहीं तो फिर नापास कहा जाता है। उस पढ़ाई में तो फिर दुबारा पढ़ते हैं। इसमें दूसरा वर्ष पढ़ने की तो बात ही नहीं। जन्म जन्मान्तर कल्प कल्पान्तर वही इम्तहान पास करते हैं जो कल्प पहले किया है। इस ड्रामा के राज को भी अच्छी रीत समझना है। कई समझते हैं हम चल नहीं

सकते हैं। बूढ़ा है तो उनको हाथ से पकड़ चलाओ तो चलेंगे नहीं तो गिर पड़ेंगे। परन्तु तकदीर में न है तो कितना भी जोर देते फूल बनाने का परन्तु बनते ही नहीं। स्वर्ग में चलने का न होगा तो चलेंगे ही नहीं। उसको कहा जाता है कांटा। अक भी नहीं। अक फिर भी फूल होता है। यह तो कांटे ही चुभते हैं। बाप कितना समझाते हैं कल तुम जिस शिव की पूजा करते थे वह आज तुमको पढ़ा रहे हैं। हर बात में पुरुषार्थ के लिये ही जोर दिया जाता है। देखा जाता है माया अच्छे2 फूलों को नीचे गिरा देती है। हड्डी गुड्डी ही तोड़ देती है। जिसको फिर ट्रेटर कहा जाता। अच्छे2 फूलों को नीचे गिरा देती है। जो एक राजधानी छोड़ दूसरे राजधानी में चला जाता है उनको ट्रेटर कहा जाता है। बाप भी कहते हैं मैं बनकर फिर माया के बन जाते हैं तो उनको भी ट्रेटर कहा जाता है। उनकी चलन ही ऐसी हो जाती है। अभी बाप माया से छुड़ाने आये हैं। बच्चे कहते हैं माया बड़ी दुस्तर है। अपने तरफ बहुत खैंच लेती है। माया जैसी चकमक है। इस समय चकमक का रूप धारण करती है। कितनी खुबसुरती दुनिया में बढ़ गई है। आगे यह बायस्कोप आदि थोड़ेही थी। यह सभी 100 वर्ष में निकले हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। ऐसे नहीं कहेंगे 125 वर्ष हुआ नहीं। ड्रामा की तो लिमिट है ना। ड्रामा को अच्छी रीत समझना चाहिए। हरेक बात एक्युरेट नूंधी हुई है। 100 वर्ष में यह जैसा वाहिस्त बन गया। आपोजीशन के लिये। तो समझा जाता है अब स्वर्ग और ही जल्दी होना है। सायंस भी बहुत काम में आती है। यह तो बहुत सुख देने वाला भी है ना। वह सुख स्थाई हो जायेगा इसके लिये पुरानी दुनिया का विनाश भी होना है। सतयुग का सुख है ही भारत के भाग्य में। वह तो आते ही बाद में हैं। जब भक्ति मार्ग शुरू होता है, जब भारतवासी गिरते हैं तो वह नम्बरवार आते हैं। भारत गिरते2 एकदम एट आगर पड़ती है। फिर चढ़ना है। गिरते ऐसे हैं जैसे बिलकुल जट बन जाते। यहां भी चढ़ते हैं फिर गिरते हैं। कितना गिरते हैं बात मत पूछो। कोई तो मानते ही नहीं कि शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। अच्छे2 सर्विस एबुल जिनकी बाप महिमा करते हैं वह भी माया के चन्दे में आ जाते हैं। कुश्ती होती है ना। माया भी ऐसे लड़ती है। एकदम पूरा डंस लेती है। आगे चल तुम बच्चों को मालूम पड़ता जायेगा। माया एकदम पूरा सुला देती है। फिर भी बाप कहते हैं एक बार ज्ञान सुना है तो स्वर्ग में जरूर आवेंगे। बाकी पद तो पा न सकेंगे। कल्पपहले जिसने जो पुरुषार्थ किया है वा पुरुषार्थ करते2 गिरे हैं, ऐसे ही अब भी गिरते और चढ़ते रहते हैं। हार और जीत होती है ना। सारा मदार बच्चों का याद की यात्रा पर है। बच्चों को यह अखुट खजाना मिलता है। वह तो कितना लाखों का दिवाला मारते हैं। कोई लाखों का धनवान बनते हैं सो भी एक जन्म में। दूसरे जन्म में थोड़ेही इतना धन रहेगा। कर्मभोग है। वहां तो कर्मभोग की बात ही नहीं। इस समय तुम 21 जन्मों लिये कितना जमा करते हो। जो पूरा पुरुषार्थ करते हैं, पूरा स्वर्ग का वरसा पाते हैं। यह ख्याल न करना है कि नीचे गिरेंगे भी सभी से जास्ती। नहीं। गिरते तो हैं। अभी फिर चढ़ना ही है। आटोमेटिकली पुरुषार्थ भी होता रहता है। देवताओं की कितनी पूजा होती है। सभी से जास्ती पूजा शिव की होती है। जिसको ही फिर ठिक्कर भित्तर में डाल दिया है। लक्ष्मी नारायण कृष्ण आदि को ठिक्कर भित्तर में नहीं कहा जाता है। मनुष्यों की कितनी पत्थर बुधि बनी है। ऊंच ते ऊंच बाप को ठिक्कर भित्तर में डाल दिया है। यह भी ड्रामा में ऐसा पार्ट है। बाप समझाते हैं देखो माया कितनी प्रबल है। मनुष्यों में कितना अज्ञान भरा हुआ है। भारत कितना फर्स्ट क्लास था। तुम समझते हो हम ऐसे बन हुये थे। अभी फिर बन रहे हैं। इन देवताओं की कितनी महिमा है। परन्तु कोई जानते ही नहीं। तुम बच्चों के सिवाय। तुम ही जानते हो बेहद का बाप ज्ञान सागर हमको पढ़ा रहे हैं। कृष्ण की तो बात ही नहीं। झूठी शास्त्र आदि पढ़ते2 कितना नीचे आ जाते हैं। माया बहुतों को संशय में डाल देता है। झूठ कपट छोड़ते ही नहीं। तब बाबा कहते हैं सच्चा2 अपना चार्ट लिखो। परन्तु सच्च कोई दिखाते थोड़ेही हैं। देहअभिमान कारणसच्च नहीं बतलाते हैं। तो वह भी विकर्म बन जाता। सच्च बताना चाहिए। नहीं तो बहुत सजा खानी पड़ती है। गर्भजेल में भी बहुत सजा

27-11-62

मिलती है। कहते हैं तोबा तोबा हम प्रतिज्ञा करते हैं। फिर ऐसा काम न करेंगे। जैसे किसको मार मिलती है तो भी ऐसे माफी मांगते हैं ना। तो सजा मिलने पर भी ऐसे करते हैं। अभीतुम समझते हो माया का राज्य कब सु शुरु हुआ, पाप करते रहते हैं। बाप देखते हैं यह इतना मीठा, मुलायम नहीं बनते हैं। बाप कितना मुलायम, बच्चे भी जैसे हो चलते हैं। हां अच्छा ठीक है। क्योंकि ड्रामापर चलते रहते हैं। कहेंगे जो हुआ ड्रामा की भावी। समझते भी हैं कि आगे ऐसा न हो। यह बाप दादा दोनों इकट्ठे हैं ना। दादा की मत अपनी। ईश्वर की मत अपनी हैं। समझना चाहिए यह मत कौन देते हैं। यह भी बाप तो है ना। बाप की तो माननी चाहिए। फिर भी बेहद का बाबा है। निमित्त बना हुआ है ड्रामा में तो जनकभी मानना चाहिए ना। बाबा तो बड़ा बाबा है ना। इसलिये बाबा कहते हैं ऐसे ही समझो शिव बाबा समझाते हैं। न समझेंगे तो पद भी नहीं पायेंगे। ड्रामाके प्लेन अनुसार बाप भी है दादा भी है। बाप की श्रीमत मिलतीहै। माया ऐसी है जो महावीर पहलवान से भी कोई न कोई उल्टा काम कराती है। समझा जाता है यह बाप की मत पर नहीं हैं। खुद भी फील करते हैं मैं अपनी आसुरी मत पर हूं। श्रीमत देने वाला आकर उपस्थित हुआ हैना। उनकी है ईश्वरीय मत। बाप कहते हैं इनकी अगर कोई ऐसी मत मिल गई तो भी उनको मैं ठीक करने वाला बैठा हूं। फिर भी हमने रथ लिया है ना। हमने रथ लिया है तब ही इसने गाली खाई है। नहीं तो कब गाली नहीं खाई। मेरे कारण कितनी गाली खाते हैं। तो इनकी भी सम्भाल करनी चाहिए। बाबाने कह दिया हर्जा नहीं है। तुमको कहांजाने की दरकार नहीं। कुछ भोगना भी भोगना है, यह भी आगे चल हल्के हो जावेंगे। डरने की कोई बात ही नहीं। तो बाबाने भी कहा ठीक है कहां जाने की दरकार नहीं हैं। बराबर बहुत फायदाहै। बाप रक्षा जरूर करते हैं। जैसे बच्चों की रक्षा बाप करते हैं ना। जितना सच्चाई पर चलते हैं उतनारक्षा होतीहै। झूठे की रक्षा नहीं होती। उनकी तो फिर सजा कायम हो जाती है। इसलिये बाप समझाते रहते हैं माया तो एकदम नाक से पकड़ कर खत्म कर देती है। बच्चेखुद फील करते हैं। माया आ लेती है फिर पढ़ाई छोड़ देते। बाप कहते हैं पढ़ाई जरूर पढ़ो। अच्छा कहां ब्राह्मणी का दोष है तो सेलवेशन दी जाती हैडायरेक्ट मुरली की। कोई कोई थर्ड ग्रेड ब्राह्मणियां होती हैंबहुत तंग करती हैं। इसमें जैसा जो करेगा सो भविष्य में वैसा पावेंगे। क्योंकि अभी दुनिया बदलती है। माया ऐसी थप्पर मारती है जो वह खुशी नहीं रहने देती। फिर चिल्लाते हैं बाबा पता नहीं क्या होता है। युध के मैदान में बहुत खबरदारी रहती हैं। कि कहां मायाथप्पर न मारे। फिर भी जास्ती ताकत वाला होता है तो दूसरों को गिरा देते हैं। अगर दोनों एक दो से तंग होते हैं तो फिर स्टाप कर देते हैं। समझते हैं अभी थक गये हैं। फिर दूसरे दिन पर रख देते हैं। माया की लड़ाई तो अन्त तक चलती रहती हैं। नीचे ऊपर होते रहते हैं। अच्छे2 महारथी सच्च नहीं बताते हैं। ईज्जत का बहुत डर है। पता नहीं बाबा क्या कहेंगे। जब तक सच्च बताया न है तब तक आगे चल न सके। अन्दर बहुखटकता रहता हैं। फिर वृधि हो जाती हैं। अच्छे 2 महारथी बहुत हैं जो आप ही सच्च कभी नहीं बतावेंगे। कहां दो हैं तो समझते हैं यह को सुनावेंगे तो हम भी सुना दें। माया बड़ी दुस्तर है। समझा जाता है इनकी तकदीर में इतना ऊंच पद न है। जो सर्जन से छिपाते हैं। छिपाने से बिमारी छूटेगी थोड़ेही। जितना छिपावेंगे उतना गिरते ही रहेंगे। भूत तो सभी में है ना। जब तक अतीत अवस्था न बनी है तब तक क्रिमनल आई छोड़ती ही नहीं है। सबसे बड़ा दुश्मन है काम। कई गिर पड़ते हैं। बाबा तो बार बार समझाते हैं शिव बाबा की भाकी पहनना कोई दासी का घर नहीं। फिर और कोई को भाकी पहन नहीं सकते। परन्तु खुद भी समझते हैं हम तो भाकी पहनते रहते हैं। ऐसे भी बहुत हैं। कई तो ऐसे पक्के हैं जो कब किसकी याद भी नहीं आवेगी। पतिव्रता स्त्री होती हैना। उनकी कुबुधि नहीं होती है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

:- शिव बाबा याद है:-